बदलाव की दहलीज पर शिक्षक शिक्षा की चुनौतियाँ एवं अवसर

डॉ0 शिखा चतुर्वेदी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
शिक्षा संकाय, एन.ए.एस. कॉलेज, मेरठ (उ.प्र.)

सारांशिका

अनुभव सभी बातों का शिक्षक है। प्रौद्योगिकी सिर्फ एक उपकरण है। छात्रों को एक साथ प्रेरित करने के लिए शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण है। एक अच्छा शिक्षक आशा एवं कल्पना को प्रज्जवलित कर सकता है और सीखने के प्रतिप्रेम पैदा कर सकता है। सभी कठिन कार्यों में जो सबसे कठिन है वो है एक अच्छा शिक्षक बनना। कक्षा–कक्ष ही उनकी दुनिया होती है, जहाँ वे अपने छात्रों के साथ एक नई दुनिया बनाने के सपने को साकार करने का प्रयास करते हैं। शिक्षा जगत की तमाम विसंगतियों के उपरान्त भी भारतीय शिक्षक एवं छात्र सदैव नए क्षितिज की तलाश में ही रहते हैं। कई देश भारतीय प्रतिभा की शक्ति का लोहा भी मान रहे हैं। इन सबके उपरान्त भी बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समय, परिस्थिति के अनुरूप कुछ आमूलचूल परिवर्तन भी आवश्यक हो जाते हैं। समय बदलाव की दहलीज पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में छात्रों को मूल्य–परक शिक्षा से लेकर आधुनिक तकनीकी से शिक्षित प्रशिक्षित किये जाने की आवश्यकता का अनुभव किया जा रहा है। जिसमें स्वामी विवेकानन्द की शब्द निर्झरणी के सन्दर्भ में चरितार्थ भी किया जा सकता है कि ''शिक्षा ऐसी हो, जिससे चरित्र का निर्माण हो, मानसिक शक्ति का विकास हो और हम आत्मनिर्भर बन सकें।'' बढ़ते वैश्वीकरण के कारण भारत के भविष्य निर्माण में विज्ञान को चुना गया है। परिवर्तन का सिलसिला तो शाश्वत है, बस हम बदलाव की दहलीज पर बदलने को तैयार रहे। ज्ञान के संचार में, तकनीकी के विकास में, सामाजिक परिवर्तन, निजीकरण, सहयोग शिक्षा के प्रसार हेतु वैश्वीकरण के उद्देश्यों में इतनी सार्वभौमिकता एवं सर्वव्यापकता निहित है कि उनको प्राप्त करने के बाद विश्व संरचना मनोरम एवं सुन्दर होगी। ऐसी स्थिति में एक योग्य शिक्षक ही योग्यतम उत्पादन कर सकता है, जिसमें उत्तम शिक्षण विधियों के प्रयोग की प्रभावशाली जानकारी एवं योग्यता हो, इस गुण की धारणा हेतु शिक्षकों को भी व्यापक शिक्षण एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है क्योंकि शिक्षा क्षेत्र में सुधार हेतु जब नये कार्यक्रम लागू होते हैं तो चुनौतियों का अंबार लग जाता है। तब नीतियों एवं चुनौतियों के संतुलन कार्य से ही अवसर भी उत्पन्न हो जातें हैं।

मुख्य शब्दः क्षितिज, वैश्वीकरण, शिक्षक–शिक्षा, परिप्रेक्ष्य, आत्मनिर्भरता, तकनीकी एवं मूल्य

प्रस्तावनाः

कोविड–19 महामारी के संक्रमण के प्रकोप के चलते छात्रों के व्यक्तित्व के समग्र विकास हेतु चलने वाली सांस्कृतिक, साहित्यिक और खेलकूद, कला–कौशल सम्बन्धित गतिविधियाँ एवं कार्यक्रम सभी बाधित हुए हैं। लेकिन कोरोना के कारण जहाँ चुनौतियाँ उभर कर आई हैं वहीं कुछ नये अवसरों ने भी द्वार पर दस्तक दी है। क्योंकि जहाँ समस्यायें होती हैं। वहाँ उनके समाधान भी होते हैं। अतः जीवन में आये अवसरों को हमें साहस एवं ज्ञान के द्वारा समझना होगा। कोरोना संकट ने शिक्षा के क्षेत्र में जिन चुनौतियों को जन्म दिया है। उनमें सबसे बड़ा बदलाव कक्षा शिक्षण का ऑनलाईन शिक्षा में बदल जाना है। इस अनुकूलता में शिक्षक और शिक्षार्थी के साथ–साथ पाठयक्रम, मूल्यांकन और सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को नये बदलाव में प्रभावशील बनाना होगा। जिसके लिए स्थानीय स्तर से केन्द्र स्तर तक विशेष तैयारियों की आवश्यकता है। विकास के चरणों को ध्यान में रखते हुए सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को अपने अन्दर आमूलचूल बदलावों को स्वीकृति देनी ही होगी जिससे कि शिक्षक समता एवं बदलाव के प्रश्नों पर उचित पहल कर सकें। शिक्षकों से आशा की जाती है कि वे शिक्षण कार्य में क्रान्ति लाएंगें तो वह क्रांन्ति सर्वप्रथम शिक्षक शिक्षा के कॉलिजों में होनी चाहिए।

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में शिक्षक शिक्षा– वैश्वीकरण ने सम्प्रेषण तकनीकी तथा सूचना तकनीकी जैसे माध्यमों की सहायता से विश्व को वैश्विक ग्राम का रूप दे दिया है। जिससे कि शिक्षा में गुणवता संवर्धन की अपेक्षा की जा सकती है। ''स्वपणप्रकाशेनालोकं भवितव्यानाम्।'' अर्थात अगर हम अपने आपको चुनौती नहीं देते हैं तो हम कभी भी महसूस नहीं कर पायेगें कि हम क्या बन सकते हैं। क्योंकि परिपक्वता और समझदारी इसमें नहीं है कि हम कितना जानते हैं, और कितने शिक्षित हैं, बल्कि इसमें है कि हम चुनौतियों का सामना करने में कितने सक्षम है। हिम्मत, हौंसला और उच्च मनोबल के साथ कितना सामजंस्य है।युनेस्को के अनुसार–''किसी भी देश की शिक्षा का सम्बन्ध उस क्षेत्र की संस्कृति के संरक्षण तथा विकास के लिए होना चाहिए।'' क्योंकि आज शिक्षा की सबसे बड़ी चुनौती है उसका जीवनोन्मुखी न होकर परीक्षोन्मुख होना।''

बदलाव की दहलीज पर शिक्षक शिक्षा की वर्तमान चुनौतियाँ

भारतीय समाज में सदैव ही शिक्षा के प्रति एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठापूर्ण दृष्टिकोण रहा है। हम सतत रूप से ज्ञानपरक समाज की ओर निरन्तर अग्रसर हो रहे हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के कार्य में शिक्षकों की भूमिका निःसन्देह सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। कक्षा–कक्षों के अध्यापन को जीवन्तता प्रदान कर, बदलते समाज की आवश्यकताओं पर अवलम्बित रोजगारपरक अपेक्षित कौशल आधारित एवं उच्च नैतिक–सामाजिक–आध्यात्मिक–भावात्मक मूल्यों से अंलकृत शिक्षा में गुणवत्ता की वृद्वि की जा सकती है। इसके लिए पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या एवं पाठ्य पुस्तकों में बदलाव लाने होगें तथा शिक्षक शिक्षा के प्लेटफॉर्म पर शिक्षकों में आत्मविश्वास, विषयगत प्रभावी जानकारी, शिक्षण कौशलों का विकास एवं आधुनिक सूचना तकनीकी एवं सम्प्रेषण प्रविधियों से सुसज्जित करने हेतु प्रयास करना होगा। धन, समय व दूरी की सीमाओं को लांघकर विज्ञान, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में दस्तक देनी होगी। शिक्षक शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा से है जो भावी

शिक्षक को उत्तरदायित्वों का कुशल निर्वहन करने योग्य प्रभावशाली एवं सफल शिक्षक बनने में योगदान देती है। वर्तमान युग में जहाँ सम्पूर्ण विश्व ज्ञान विस्फोट एवं जनसंख्या विस्फोट, पर्यावरण संरक्षण जैसी चुनौतियों से रूबरू हो रहा है, ऐसी स्थिति में शिक्षक शिक्षा का कार्य और भी चुनौतीपूर्ण हो गया है।

कोविड 19 जैसी वैश्विक महामारी की विषम परिस्थितियों में शिक्षक शिक्षा भी बदलते परिदृश्य में बदलाव की दहलीज पर ठिठक गई है। कहीं ज्ञान एवं सही दिशा निर्देशन का अभाव है तो कहीं साधन का अभाव है। नित्य प्रतिदिन के बदलावों ने पाठ्यक्रम, गुणवत्ता, मूल्यांकन, माध्यम, खोज–शोध जैसे क्षेत्रों को व्यापक तो बना दिया है। मगर आवश्यकता के अनुरूप कौशल या प्रवीणता नहीं है। अतः विचारों की लेखन अभिव्यक्ति का मुख्य उद्देश्य यही है कि बदलाव की दहलीज पर शिक्षक शिक्षा का व्यक्तिगत, सामाजिक, व्यावसायिक मूल्यों एवं सामाजिक स्वास्थ्य का विकास कर उन्हें शिक्षकों के उत्तरदायित्वों का प्रभावशाली तरीके से निर्वहन करने योग्य बनाना है। इसके लिए शिक्षक शिक्षा के ढाँचे में वर्तमान जीवनशैली–कार्यशैली की प्रासंगिकता को चरितार्थ करना होगा। क्योंकि शिक्षक शिक्षा का कार्यक्षेत्र काफी व्यापक है। जैसे तकनीकी के कारण छात्रों में ध्यान केन्द्रीयकरण की समस्या देखने को मिल रही है। सोशल साइट्स एक्टीविटी पर नजर रखनी होगी,शिक्षक कायह भी उत्तरदायित्व बन जाता है कि वह सोशल प्लेटफॉर्मों पर पैनी नजर रखें कि कहीं उसके प्रभाव से छात्रों के सामाजिक, नैतिक एंव स्वास्थ्य पर प्रतिकुल प्रभाव तो नहीं पड़ रहा है। ऐसी स्थिति में कुछ बदलाव स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहें हैं जैसे

(1) सीखने–सीखाने की गतिविधियाँ (2) ज्ञान

(3) सम्प्रेषण कुशलता का अभाव (4) अनुभव

(5) ई–शिक्षा (6) सोशल मीडिया

(7) प्रगतिशीलता / मूल्यों का समन्वय (8) गुणवत्ता

(9) स्वास्थ्य (10) औपचारिक प्रशिक्षण

(11) तकनीकी शिक्षा एवं शब्दावली (12) परम्परागत संरचना

(13) सामाजिक सरोकारों का अभाव

शिक्षक शिक्षा के बदलाव से जुड़े प्रश्नों के केन्द्र में उच्चशिक्षा में शिक्षक शिक्षा के स्थान, गुणवत्ता, पाठ्यचर्या की पुनःसंरचना और उसके क्रियान्वयन के पक्षों को मजबूत करने की राह तथा शिक्षा और उदीयमान सामाजिक सरोकारों के मध्य संवाद सेतु की स्थापना की संभावना की जानी चाहिए। इस प्रकार के सकारात्मक प्रयास की पहल के द्वारा भावी प्रभावशाली शिक्षक की भूमिका समझ सकते हैं, जो छात्रों की चेतनता के अंकुरन, जिज्ञासा पिपासाओं की शान्ति का माध्यम एवं उनकी सृजनात्मक एवं सामाजिक स्वस्थता तथा सीखने की इच्छा का पोषण कर सके। व्यावहारिक क्रियाओं को सशक्त व क्रियाशील होने का अवसर दिये जाने हेतू। संपर्क, संवाद और सृजनशीलता की आवश्यकता है।

उक्त परिप्रेक्ष्य में एक व्यापक, गतिशील, मूल्यों पर आधारित संवेदनशील, उत्तरदायी, समावेशी, अभिनव और सतत वैश्वीकरण पर आधारित, खाइयों को पाटने वाली, प्रभावी सेतुओं की निर्माणक सामर्थ्य रखने वाली शिक्षक शिक्षा को विकसित करना हमारी सबसे बड़ी चुनौती है। बदलाव के परिप्रेक्ष्य में हमें शिक्षक के गुणवत्तापूर्ण परिदृश्य पर भी दृष्टि केन्द्रित करना है। जिसके तीन आयाम हैं– आधारभूत पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां एवं व्यावहारिक ज्ञान। लेकिन हमारी शिक्षा समाज की आंकाक्षाओं एवं आवश्यकताओं पर अवलम्बित नहीं है। साथ ही इसमें जीवन कौशलों एवं मूल्यों के संवर्धन का भी अभाव है। इसमें भारतीय संस्कृति की पहचान बनी उक्ति–'उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' को सुदृढ़ बनाने की सामर्थ्य संचित नहीं हो पा रही है। अतः शिक्षक शिक्षा की एक ऐसी राष्ट्रीय व्यवस्था विकसित करनी होगी जो भारत की संस्कृति, मूल्य, एकता एवं विविधता पर आधारित होने के साथ ही सामाजिक बदलाव एंव निरन्तरता की शाश्वत धारा के अनुरूप हो। उक्त सन्दर्भ में प्रश्नचिन्ह बन जाता है कि वर्तमान में शिक्षक शिक्षा का दायित्व एवं दिशा तथा दशा कैसी है? क्या शिक्षक शिक्षा देश की वर्तमान आवश्यकताओं एवं भारतीय सांस्कृतिक विरासत के अनुरूप संस्कारों को सहेजने में सफल है? इस प्रयोजन हेतु शिक्षकों का यह उत्तरदायित्व बन जाता है कि वह अपने छात्रों का मार्गदर्शन उचित तरीके से करें। क्योंकि ज्ञान के मूल स्रोत वही हैं और ज्ञान प्राप्त करने के लिए छात्र उन पर निर्भर हैं। एक तरह से ज्ञान की रोशनी का दीप प्रज्जवलित करने का कार्य शिक्षक ही करते हैं। वैश्वीकरण के दौर में सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के फलस्वरूप सोशल मीडिया एवं सूचना तकनीकी बदलाव के कारण शिक्षा का स्वरूप भी बदलता जा रहा है जिससे कि शिक्षकों की भूमिका में भी बदलाव आ रहा है। तकनीकी कुछ ऐसी हावी हुई है कि अब तो डिजिटल मीडिया को अपने शिक्षक के तौर पर छोटे बच्चे भी अपना रहे हैं।

शिक्षण का कार्य अगली पीढ़ी को इन सभी संघर्षों में केवल दो के जोड़े में से किसी एक का चयन करना ही नहीं बल्कि उनके मध्य सन्तुलन स्थापित करने की क्षमता का विकास करना है। जैसे कि निम्न चित्र में अवलोकित किया गया है।

शिक्षक शिक्षा की प्रांसगिकता एवं पुनरावलोकन –बदलते परिदृश्य में शिक्षकों की भूमिका भी परिवर्तित हुई है। आज जब इंटरनेट और सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म यूटयूब, फेसबुक, गुगल, स्कॉलर, जूम, इत्यादि के स्वयं मॉक द्वारा पाठ्य सामग्री की भरमार हो गई है। जिसकी प्रामाणिकता पर कभी–कभी प्रश्न चिन्ह भी लगता रहता है। ऐसी स्थिति में कोविड महामारी 2019 के कारण शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी ने मानवीय ज्ञान में वृद्वि की है, जिसके प्रमुख पक्ष है–

(1) ज्ञान को संचित करना (Preservation of Knowledge)

(2) ज्ञान का प्रसार करना (Transmission of Knowledge)

(3) ज्ञान का विकास करना (Advancement of Knowledge)

इन पक्षों का प्रतिबिम्ब नीचे दिये गये चित्र के माध्यम से प्रदर्शित किया

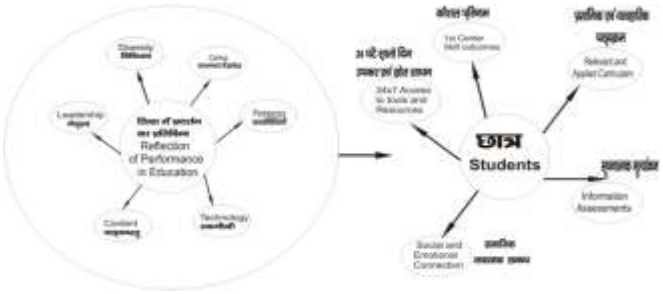

इस प्रकार शिक्षक शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी माध्यमों की सहायता से कक्षा में एवं कक्षा से बाहर भी शिक्षण, अनुदेशन एवं अधिगम की व्यवस्था की जा रही है। विभिन्न प्लेटफॉर्मो के द्वारा शिक्षक– छात्र तक पहुँच रहे हैं। इस प्रकार आधुनिक कम्प्यूटर, इंटरनेट पर आधारित तकनीकी ने न केवल शैक्षिक प्रसार के स्वरूप को परिमार्जित किया है बल्कि तकनीकी के समावेशन की प्रक्रिया द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रमाणिक एवं सर्वसुलभ स्तंम्भ निर्मित किया है। अब ऐसा प्रतीत होने लगा है कि समस्त विश्व एक 'ई' के साथ ही शुरू हो रहा है – यह है कि ई–मेल, ई–लर्निग, ई–बिजनेस, ई–कन्टैन्ट, ई–वेस्ट, ई–बैंकिग, या ई–सर्विसेज इत्यादि। अर्थात वर्तमान में इलैक्ट्रोनिकी एक ही प्रमुख तकनीक है। स्कूल, कॉलिज एंव विश्वविद्यालयों में कम्प्यूटरों का व्यापक प्रयोग प्रशासनिक, प्रवेश परीक्षा, मूल्यांकन से लेकर, ई–लर्निगं, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग किया जा रहा है। शिक्षक शिक्षा की चुनौतियाँ असंख्य है। केवल उनको गिनते रहना ही नहीं है वरन मूलभूत परिवर्तन हेतु बुद्विजीवी समाज को भारत की शिक्षा को भारत केन्द्रित करना होगा, क्योंकि पढ़ाई का अर्थ केवल रोजगार ही नहीं बल्कि श्रेष्ठ मनुष्य का निर्माण करना, जीवन मूल्य, आत्मगौरव तथा राष्ट्र के गौरवभाव को जाग्रत करना है।

निष्कर्ष– उपरोक्त परिदृश्य से यह आभास होता है कि आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र– शिक्षा, उद्योग, आर्मी, स्वास्थ्य, तकनीकी एवं प्रशासनिक कार्यो आदि में नवीन उपसंस्कृति अंकुरित हो रही है तथा प्रत्येक क्षेत्र में नवीन कार्य के मानक एवं मूल्य भी बड़े पैमाने पर गढ़े जा रहे हैं। विगत दशकों में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर शैक्षिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक सन्दर्भो में तेजी से बदलाव आने के परिणामस्वरूप विशेष रूप से शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम एवं शिक्षणमाध्यमों में आमूलचूल परिवर्तन लाने ही होगें। पाठ्यक्रमों को ज्ञान के नये क्षितिज, नवीन कौशलों, अभिवृत्तियों तथा जीवन मूल्यों पर आधारित करने एवं जीवनोपयोगी सामर्थ्यता से परिपूर्ण बनाने की संस्तुति शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर करनी होगी। जिससे कि शिक्षित–प्रशिक्षित जनशक्ति आधुनिकीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीय चुनौतियों का सामना कर सकें तथा जो विकास प्रक्रिया के साथ अग्रसर हो सके। जिसमें सभी स्तरों पर गुणवत्ता लाने का प्रयास समाहित हो। एक ऐसी शिक्षा प्रणाली जिसमें श्रम के महत्व को स्वीकारोक्ति मिलें। जिससे सामाजिक राष्ट्रीय उत्तरदायित्व की भावना में वृद्वि हो सके। जिसमें आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ विश्व–बन्धुत्वता का भाव निहित हो। जो सभी को आत्मविश्वास एवं आत्मगौरव की अनुभूति कराती हो तथा समाज के सर्वोत्कृष्ट उत्थान में सशक्त भूमिका का निर्वहन करती हो। क्योंकि शिक्षक के बगैर आप सभ्य और समृद्व समाज की कल्पना नहीं कर सकते। सफलता से बड़ा कोई शिक्षक नहीं क्योंकि रचनात्मक अभिव्यक्ति और ज्ञान में प्रसन्नता जगाना शिक्षक की सर्वोच्च कला है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(1) भारत सरकार (2009) शिक्षा का अधिनियम

(2) गर्ग, किरन (2017), अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता, पंखुड़ी एन इन्टरडिसिप्लीनरी जर्नल,बागपत, उ0प्र0

(3) गुप्ता एस.एस.पी. अलका (2013), शिक्षा की समस्यायें, शिक्षा ज्ञान कोष श्रृंखला – 06, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

(4) एन0सी0ई0आर0टी0फ्रेमवर्क (2005) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, नई दिल्ली (NCERT)

(5) विस्तृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, गाँधी शिक्षण भवन, शिक्षा महाविद्यालय, मुंबई विश्वविद्यालय मुंबई (2000)

(6) http://onlinelibrary.com

(7) http://www.sakshat.ac.in

(8) http://www.ignou.ac.in

(9) http://www.cbse.nic.in

(10) http://www.nios.ac.in

(11) https://rashtriyashiksha.com

(12) shodhganga.com

(13) www.education.nic.in

(14) www.google.com